गुप्तवंश
[275 - 570] AD

5th lecture.

Scanned with CamScanner

गुप्त वंश
[275 - 570] AD

प्राचीन भारत के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण वंश है। इस काल में सभी क्षेत्रों में विकास हुआ, लेकिन कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ। जिसके लिए गुप्त काल को स्वर्णकाल कहा गया है।

→ स्मिथ महोदय ने गुप्तकाल को स्वर्णकाल की संज्ञा दी है।

→ गुप्तवंश के महत्वपूर्ण शासक निम्नलिखित हैं —

275-300 AD

श्रीगुप्त :— यह गुप्तवंश का संस्थापक था। कुछ विद्वानों के अनुसार यह कुषाणों का सामंत था। चीनी यात्री इत्सिंग ने इसको 'चे-ली-के-तो' नाम से संबोधित किया है। इस शासक ने चीनी बौद्ध भिक्षुओं के लिए मगध में एक बौद्ध मंदिर का निर्माण कराया था। इसके सिक्का पर श्रीगुप्तस्य शब्द अंकित मिला है। अधिकांश विद्वानों ने इनलोगों को वैश्य माना है।

⇒ घटोत्कच [300 - 319] AD →

चन्द्रगुप्त II की पुत्री प्रभावती गुप्ता के सुपिया अभिलेख में इसको आदिराज कहा गया है।

⇒ चन्द्रगुप्त I (319 - 334) AD :—

यह गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था, क्योंकि इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण किया था। इसने अपने महाराजाधिराज की उपाधि धारण किया था। इसने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए लिच्छवी राज्य की राज कुमारी कुमार देवी से विवाह किया, जिस पुत्र समुद्र-गुप्त था।

Scanned with CamScanner

→ चन्द्रगुप्त ने 319 ई० में गद्दी पर आने के उपलक्ष्य में गुप्त संवत् को जारी कर दिया था। इसके 25 प्रकार का सिक्का प्राप्त हुआ है, जिसमें राजारानी प्रकार, कुमार देवी प्रकार और विवाह प्रकार अधिक प्रसिद्ध है।

⇒ समुद्रगुप्त [335 - 380] AD :-

यह चन्द्रगुप्त - I का योग्य पुत्र था। प्रयाग प्रशस्ति में इसके उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

प्रयाग प्रशस्ति :- यह समुद्रगुप्त से संबंधित है, जिसके लेखक हरिषेन थे, जो इसके दरबारी कवि और मंत्री भी थे। यह चंपु शैली (गद्य और पद्य का मिश्रण) में लिखा गया है। प्रयाग प्रशस्ति में ही समुद्रगुप्त को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहा गया है। इसमें समुद्रगुप्त के उपलब्धियों का वर्णन है, लेकिन अश्वमेध यज्ञ का उल्लेख नहीं किया गया है।

- स्मिथ महोदय ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है।
- समुद्रगुप्त की तुलना यमराज, कुबेर, इन्द्र और वरुण से किया गया है।

सामाज्य विस्तार :-

- इसने सभी क्षेत्रों में अपने साम्राज्य का विस्तार किया इसलिए इसे चक्रवर्ती सम्राट कहा गया है।

उत्तरी राज्य :- समुद्रगुप्त ने सर्वप्रथम उत्तर भारत के 9 राज्य को जीतकर अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया।

आटविक राज्य :- जंगली क्षेत्रों में छोटे-छोटे 18 राज्य थे। इनके क्षेत्र को महाकान्तर कहा गया है।

Scanned with CamScanner

इसको भी साम्राज्य में मिला लिया।

→ दक्षिणी राज्य :- कुल 12 राज्य थे जिसके लिए तीन प्रकार के नीति का पालन किया गया -
(a) ग्रहण की नीति
(b) मोक्ष की नीति
(c) अनुग्रह की नीति।

→ सीमावर्ती राज्य :- इसके अन्तर्गत 5 राज्य और 9 गणराज्य शामिल थे जिन्होंने समुद्रगुप्त के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया।

→ विदेशों से संबंध :-
श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त की आज्ञा लेकर बोध गया में एक बौद्ध मठ का निर्माण कराया, जिसके खर्च के लिए समुद्रगुप्त ने 5 गाँव दान में दे दिया।
इस विजय के उपलक्ष्य में समुद्र गुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया और 6 प्रकार का सिक्का भी जारी किया। जैसे - वीणावादन, व्याघ्रहंता, अश्वमेध, धनुर्धर, गरुड़ और परशु प्रकार का सिक्का।

चन्द्रगुप्त - II विक्रमादित्य (380-415) AD :-
यह गुप्त वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। कुछ विद्वानों के अनुसार समुद्र गुप्त के बाद बड़े पुत्र रामगुप्त गद्दी पर आये जिनको अभिलेखों में 'काच' नाम से संबोधित किया गया है। इस समय पश्चिमोत्तर भारत में शकों का नियंत्रण था। शक शासक रुद्रसिंह III ने रामगुप्त के पास यह संदेश भेज दिया कि अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को मेरे पास भेजने पर आक्रमण नहीं करूँगा। रामगुप्त ने उसकी बात को मान लिया। लेकिन छोटे भाई चन्द्रगुप्त II ने ध्रुवस्वामिनी का भेष धारण करके शक शिविर पर आक्रमण कर दिया और रुद्रसिंह III को हत्या कर दिया।

Scanned with CamScanner

→ शकों को पराजित करने के उपलक्ष्य में इसने 'शकारि' और 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण किया। इस उपलक्ष्य मे चाँदी का सिक्का अधिक मात्रा में जारी किया जिसको सिंह विक्रम प्रकार का सिक्का कहा गया है।

वापस आने के बाद इसने रामगुप्त की भी हत्या किया और ध्रुवस्वामिनी से विवाह किया। गद्दी प्राप्त कर लिया। इन बातों का उल्लेख विशाखदत्त की पुस्तक देवीचन्द्रगुप्तम् में किया गया है।

→ दिल्ली में मेहरौली के लौह स्तंभ से इसके बारे में जानकारी मिलता है, जो अष्ट धातुओं से बना हुआ था। इस लौह स्तंभ पर 'चन्द्र' शब्द अंकित मिला है। इसको देवगुप्त और देवराज और के नाम से भी संबोधित किया गया है।

इसने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए नागकुल की राजकुमारी कुबेर नागा से विवाह किया, जिसको पुत्री प्रभावती गुप्त थी। प्रभावतीगुप्त का विवाह कन्नौज के वाकाटक वंश के शासक रुद्रसेन - II के साथ किया। इनके मृत्यु के बाद पुत्री के अनुरोध पर कन्नौज पर भी नियंत्रण कर लिया।

→ चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय सभी क्षेत्र में विकास हुआ, इसलिए इनके काल को स्वर्णकाल कहा गया है।

→ इसके समय में प्रथम चीनी यात्री फाह्यान ने भारत की यात्रा किया था।
→ इनके राजदरबार में नौ- रत्न रहते थे -

Scanned with CamScanner

(a) शंकु (d) वररूचि (g) अमरसिंह
(b) बेतालभट्ट (e) क्षपणक (h) धनवंतरि
(c) घटकर्पर (f) कालिदास (i) वराहमिहिर।

कुमारगुप्त - I [415-455] AD

→ मंदसौर अभिलेख (मालवा / मध्यप्रदेश) में इसके बारे में उल्लेख किया गया है। इसके समय में नर्मदा नदी के उद्गम स्थल अर्थात् मेकल के रहने वाले पुष्यमित्रों ने आक्रमण कर दिया। लेकिन पराजित किए।

→ कुमारगुप्त प्रथम ने नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण कराया। यह सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है।

→ इसने महेन्द्रादित्य की उपाधि धारण किया था।
→ इसने मयूर शैली का सिक्का जारी किया।
→ सर्वाधिक सिक्कों का ढेर बयाना से मिला है।

स्कन्दगुप्त (455-467) AD

→ इसे देवराय और शक्रोपम भी कहा गया है।
→ यह अंतिम महत्वपूर्ण शासक था। इसके समय में सोने के सिक्कों में मिलावट दिखाई पड़ता है। जिससे स्पष्ट होता है कि अब गुप्तों की आर्थिक स्थिति मजबूत होने लगा था।

→ इसने क्रमादित्य की उपाधि धारण किया था।
→ इसके समय में हूणों ने आक्रमण किया था।

विष्णुगुप्त (550-570) AD :- अंतिम शासक। 570 ई० में गुप्तों का पतन हुआ। कई छोटे-छोटे राज्यों में इनका साम्राज्य स्वतंत्र रूप से स्थापित हो गया।

=x=

Scanned with CamScanner